शोध मंथन Vol. XV No.III July.-Sept. 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

भारतीय भित्ति–चित्रों में प्रयुक्त प्रतीकों का चित्रात्मक विश्लेषण

प्राप्तिः 28.07.2024
स्वीकृतः 15.09.2024

63

अमित कुमार
शोधार्थी, चित्रकला विभाग,
शहीद मंगल पाण्डे राजकीय महिला स्नात्तकोत्तर
माधवपुरम, मेरठ
ईमेलः *amitk529298@gmail.com*

प्रो. उमाशंकर प्रसाद
चित्रकला विभाग,
शहीद मंगल पाण्डे राजकीय महिला स्नात्तकोत्तर
माधवपुरम, मेरठ

सारांश

भारत में भित्ति चित्रण परम्परा बहुत ही प्राचीन परम्परा है। भित्ति चित्र दीवारों (भित्तियों) पर निर्मित किये जाते थे। चित्रपट कपड़े तथा चमड़े पर निर्मित किये जाते थे। चित्र–फलकों का निर्माण हाथी दाँत और लकड़ी पर निर्मित किया जाता था। भोजपत्र, ताड़पत्र तथा कागज द्वारा पोथियाँ निर्मित की जाती थी। ज्यादातर पोथियों में चित्र संयोजन होता था। भित्ति चित्रण की परम्परा लगभग 300 ई० पूर्व 'जोगीमारा' की गुफाओं से शुरू मानी जाती है। जोगीमारा गुफा छत्तीसगढ़ राज्य में नर्मदा नदी के किनारे स्थित हैं। वे जैन भित्ति चित्र माने गए हैं। बौद्ध, जैन और वल्लभ सम्प्रदाय के मन्दिरों में चित्रपटों की दीवारों या भित्तियों पर टांगने का चलन चला आ रहा है। पुरातन काल में मनुष्य ने प्रतीक संकेत व लिपि को जन्म देने में चित्रकला की सहायता ली थी। मनुष्य के अन्दर लिपि या प्रतीकों के साथ–साथ प्रकृति और धार्मिक भावनाओं ने जन्म लिया। भारत व यूनान और चीन को कला के विकास की प्रेरणा प्रकृति तथा धर्म से मिली थी। भित्ति चित्रों की प्रतीकात्मक परम्परा लोक–कला रूपों में प्रचलित रही है। भित्ति चित्रों की बात की जाए तो जोगीमारा के काल क्रम के बाद 'अजन्ता' के गुहा मन्दिरों में बहुत सुन्दर कला संसार स्थित है।

अजन्ता भित्ति चित्रकला के अन्तर्गत 'बुद्ध' भगवान के जीवन से पहले की घटनाओं को चित्रित किया गया है। अजन्ता के भित्ति चित्रों में विभिन्न विषयों पर चित्र चित्रित किये गये हैं। परन्तु मुख्य विषय बौद्ध धर्म ही है। अजन्ता की 6 गुफाओं में ही चित्र मिलते हैं। ये 6 गुफाएँ हैं–1, 2, 9, 10, 16, 17 संख्या की गुफाएँ। भित्ति चित्रण के क्षेत्र में जो योगदान अजन्ता की गुफाओं का है, वह योगदान अन्य का नहीं है। अजन्ता की चित्रण विधि 'टेम्परा' और 'फ्रेस्को' मानी जाती है। अजन्ता के भित्ति चित्रण विषय निम्न हैं–लयात्मक, अलंकारिक, धार्मिक, सामाजिक आदि। अजन्ता के अलावा बाघ की गुफाओं में भी सुन्दर भित्ति चित्रण मिलता है। बाघ मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित है। बाघ गुफाएँ भी भित्ति

प्रतीकात्मक चित्रण का उपर्युक्त उदाहरण हैं। इसी प्रकार बादामी में भी भित्ति चित्रण का विशिष्ट समागम है। बादामी की गुफा भी इसका विशिष्ट प्रसार करती है। बादामी का सुन्दर भित्ति चित्र 'विरहिणी' है। इस चित्र का प्रतीकात्मक अर्थ 'करूणा' है। बादामी के अलावा सित्तनवासल, सिगिरिया आदि गुफाओं में भी भित्ति चित्रण के सुन्दर–सुन्दर व अलंकृत चित्र मिले हैं। ये सभी चित्र भित्ति चित्रकला में चार चाँद लगा देते हैं।

प्रस्तावना

भित्ति–चित्रण परम्परा एक बहुत ही विशिष्ट एवं प्राचीन परम्परा है। भित्ति चित्रण के द्वारा मानव ने विभिन्न विषयों व धर्मों को बहुत बारीकी से कला रूप में देखा। भित्ति–चित्रण भारत के अलावा अन्य देशों में भी विशिष्टता के साथ पाया जाता है। भित्ति–चित्रण परम्परा के विकसित रुप में बौद्ध, जैन व ब्राह्मण धर्मों का विषेश योगदान रहा है। भित्ति चित्रकला 300 ई० पूर्व (भारत में) कालक्रम में जानी जाती है। भारत में मुख्य रूप से बौद्ध धर्म व बौद्ध कला की महान विरासत भित्ति चित्रण के रूप में सुरक्षित है। ''पट–चित्र और भित्ति–चित्र की परम्परा अभी भी भारत में जीवित है।''[1] भित्ति चित्रण की इस कलात्मक धरोहर की प्रसिद्धि भारत के उत्तर पश्चिमी प्रान्तों और मध्य एशिया के अनेक देशों तक प्रसारित हो गई थी। बौद्ध धर्म के जीवन की घटनाओं व जातक कथाओं पर आध ाारित भित्ति चित्रण संसार अजन्ता की गुफाओं में प्रसारित है। इस प्रकार बौद्ध धर्म की सर्वोच्च सुन्दर कृतियाँ अजन्ता की गुफाओं में देखने को मिलती है। अजन्ता व बाघ गुफाओं में इसका विशिष्ट रूप हमें देखने को मिलता है। भित्ति चित्रण परम्परा में जोगीमारा की गुफाएँ जिनका कालक्रम 300 ई० पूर्व है, ये भित्ति–चित्रण का सर्वाधिक प्राचीन व विशिष्ट रूप हैं। जोगीमारा की गुफाओं में छतों पर अर्थात् भित्तियों पर चित्र निर्मित हुए हैं।

जोगीमारा भित्ति चित्रण या गुफाओं में जैन धर्म से सम्बन्धित चित्र निर्मित हुए हैं। जोगीमारा गुफाओं के चित्र अनुपातहीन माने गए हैं। इन गुफाओं की पृष्ठभूमि सफेद रंग की है। सफेद रंग की पृष्ठभूमि पर लाल व गेरूए रंग का अधिक प्रयोग किया गया है। जोगीमारा के चित्र मुख्यतः लाल रंग द्वारा निर्मित हैं। जोगीमारा गुफा के भित्ति चित्रों की आकृतियाँ बौनी निर्मित हुई हैं। **(चित्र सं० 1)** ऐसा माना जाता है कि जोगीमारा के भित्तिचित्रों का निर्माण देवदासी सुतनुक ने कराया था। ''असित कुमार हालदार इसका सम्बन्ध रामगढ़ के प्राचीन मन्दिरों की देवदासियों से निश्चित करते हैं।''[2] जोगीमारा के चित्रों की रचना शैली भरहुत स्तूप व सांची के स्तूप की मूर्तिकला से मिलती जुलती है। ये गुफाएँ मुख्य रूप से वैदिक काल के अन्तर्गत आती हैं। जोगीमारा की भित्ति चित्रकला में कुछ मानव आकृतियों के साथ 'हाथी' और 'मछली' चित्रित किये गये हैं। अन्य चित्रों में कुछ व्यक्ति बातें या वार्तालाप कर रहे हैं। एक अन्य चित्र में कुमुदनी के फूलों का दृश्य चित्रित किया गया है।

यह फूल खुशहाली व ताजगी का प्रतीकात्मक रूप है। इसके अलावा एक नृत्यांगना के झुंड में बैठे रहने का चित्रण है। वह नृत्यांगना नृतकों के झुंड के साथ बैठी है। इसके अलावा एक चित्रांकन में रथों का चित्र दर्शाया गया है। जोगीमारा की तरह ही बाघ गुफाओं में चित्रण कार्य किया गया है। बाघ गुफा मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित है। यह गुफा भी भारतीय भित्ति चित्रकला का बेजोकड़

नमूना है। इन गुफाओं का समय काल 626 ई० से 628 ई० के मध्य माना जाता है। भित्ति चित्र परम्परा की ये स्थली अपनी भित्तियों पर मुख्य रूप से बौद्ध धर्म के चित्र समाए हुए हैं। ये गुफाएँ गुप्त राजवंश की मानी जाती हैं। बाघ की गुफाओं में कुल 9 गुफाएँ स्थित हैं। ''इन चित्रों की अनुकृतियाँ बनाने के लिए देश के प्रसिद्ध कलाकारों को अनुकृति बनाने का कार्य सौंपा गया।''[3] इन गुफाओं की चित्रकला भित्ति चित्रण का आकृष्ट नमूना है। बाघ गुफाओं की प्रथम गुफा गृह गुफा के नाम से जानी जाती है, दूसरी गुफा पंच पांडव के नाम से जानी जाती है। तीसरी गुफा का नाम हाथी खाना और चौथी गुफा का नाम रंगमहल है। बाघ भित्ति चित्रण की पांचवी गुफा का नाम पाठशाला है। बाघ की छठवीं गुफा को शिक्षकों को निवास स्थान कहा जाता है। बाघ गुफा चित्रों में एक प्रसिद्ध चित्र 'हल्लीसक नृत्य' है। इस चित्र को खुशहाली के प्रतीक रूप में देखा जाएगा। भित्ति–चित्रण परम्परा में यह चित्र एक विषेश स्थान रखता है। **(चित्र सं० 2)** एक गुफा में 'कबूतर का जोड़ा' चित्रित किया गया है। 'कबूतर का जोड़ा' चित्र प्रेम प्रतीक के रूप में देखा गया है। बाघ की चौथी गुफा में केवल चित्र हैं। बाघ गुफा की प्रतिलिपियाँ सन् 1921 ई० में कलाकार आसित कुमार हल्दार व नन्दलाल बसु ने चित्रित की है। बाघ गुफा के अन्तर्गत प्रकृति का सर्वोत्तम रूप प्राप्त होता है। बाघ गुफा की प्रतिलिपियाँ ग्वालियर दुर्ग (मध्य प्रदेष) के गुर्जरी महल में स्थित हैं। बाघ गुफाएँ सर्वोत्तम भित्ति चित्रण को समाहित किए हुए हैं।

इसी प्रकार के क्रम में 'अजन्ता' की भित्ति चित्रकला भी भित्ति–चित्रण इतिहास में अद्वितीय स्थान रखती हैं। अजन्ता गुफाएँ महाराष्ट्र के औरंगाबाद में स्थित है। अजन्ता की भित्ति चित्रकला का एक बहुत विशिष्ट एवं विस्तृत चित्र संसार है। अजन्ता कला मुख्य रूप से बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार को समाहित किये हुए हैं। अजन्ता की भित्ति चित्रकला के अन्तर्गत भगवान बुद्ध के जीवन की घटनाओं व उनके पूर्व जन्म की कथाओं की कलाएँ चित्रित की गई हैं। अजन्ता में वर्तमान में केवल 6 गुफाओं में ही चित्र मिले हैं। वे गुफाएँ क्रमशः गुफा संख्या 1, 2, 9, 10, 16 व 17 हैं। इन गुफाओं में भित्ति चित्रकला के आकर्षक रुप मिलते हैं। ''अजन्ता में ही बुद्ध की प्रतिमाओं की पूजा दिखाई देती है।''[4] अजन्ता की खोज का श्रेय सर जान स्मिथ को जाता है। सर जान स्मिथ ने सन् 1819 ई० में इन कला तीर्थों की खोज की थी। अजन्ता भित्ति चित्रकला का निर्माण गुप्त, वाकाटक, चालुक्य व कुशाण राजवंशों के अन्तर्गत हुआ था। अजन्ता के भित्ति चित्र निर्माण में गुप्त वंश का सर्वाधिक योगदान रहा। अजन्ता की 10वीं गुफा को सबसे प्राचीन माना जाता है। 10वीं गुफा का प्रवेश द्वार भी सबसे बड़ा है। अजन्ता की 17वीं गुफा को चित्रकला के नाम से जाना जाता है। अजन्ता गुफा चित्रों के रूप वैदिक में 'मरणासन्न राजकुमारी', 'भगवान बुद्ध से सम्बन्धित जातक कथाएँ', 'बोधिसत्व पद्मपाणि' आदि चित्र बड़ी विशिष्टता के साथ चित्रित किये गये हैं। **(चित्र सं० 3)** ''गुफाओं को मौर्यकालीन काष्ठ भवन निर्माण के नमूने पर बनाया गया है।''[5]

भित्ति चित्रण का जैसा नमूना अजन्ता की गुफाओं में चित्रित है ऐसा अन्य दूसरा कहीं नहीं देखा जाता है। अर्थात् अजन्ता की चित्रकला भित्ति चित्रण का अद्वितीय रूप है। अजन्ता की गुफाओं में मुख्य रूप से 3 प्रकार के चित्र चित्रित किये गये हैं–वर्णनात्मक, अलंकारिक तथा रूप वैदिक चित्र। अलंकारिक चित्रों में अप्सरा, गन्धर्व, फूल, जानवर, पक्षी और लताएँ आदि बड़ी सुन्दरता के साथ

चित्रित किये गये हैं। अजन्ता गुफाओं में करूण रस का प्रयोग बहुत ही विशिष्टता के साथ किया गया है। अजन्ता में मुख्य रूप से कुल 30 गुफाएँ है, जिनमें से 6 गुफाओं में ही चित्र मिलते हैं। अजन्ता की 10वीं गुफा के सामने सप्तकुण्ड है। अजन्ता गुफाओं में 9वीं व 10वीं गुफा का निर्माण काल 200 ई० पूर्व का माना गया है। 16वीं व 17वीं गुफा का निर्माण काल 626 से 628 ईसवी है। भित्ति चित्रकला के इन मन्दिरों में जाली लगाने का कार्य सन् 1903 ई० व 1904 ई० में कराया गया था। अजन्ता की गुफा नं० 16 में वाकाटक लेख प्राप्त हुआ है। भारत की भित्ति चित्रकला में बादामी गुफा में भी बहुत ही विशिष्ट चित्रण हुआ है। बादामी की गुफाएँ भी भित्ति चित्रण के क्षेत्र में एक अमिट संसार लिए हुए हैं। बादामी की गुफाएँ कर्नाटक के आइहोल नामक स्थान पर स्थित हैं। बादामी का प्राचीन नाम वात्यापिपुरम् है। बादामी की गुफाएँ चालुक्य राजा पुलकेशियन द्वितीय के समय में निर्मित हुई थीं। अतः बादामी गुफाओं का निर्माण चालुक्य वंष के अन्तर्गत हुआ था। ये गुफाएँ मुख्य रूप से शैव धर्म से सम्बन्धित हैं।

बादामी गुफाओं की खोज स्टैला क्रैमरिश ने की थी। उन्होंने ही बादामी गुफाओं को शैव धर्म से सम्बन्धित बताया था। बादामी में कुल 4 गुफाएँ हैं, जिनमें 3 ब्राह्मण तथा 1 जैन धर्म से सम्बन्धित है। बादामी गुफाओं के अन्तर्गत 'शिवजी व पार्वती जी' के अनेक प्रसंग मिलते हैं। बादामी की प्रतिकृतियाँ जे०एम० अहिवासी ने तैयार की थी। बादामी की 1 व 2 संख्या गुफाओं में ही चित्र मिलते हैं। बादामी की गुफाओं में सर्वाधिक चित्र भगवान शिव के हैं। ''बादामी गुफा का बाहरी आवरण अत्यन्त सादा है, लेकिन अन्दर की ओर कलात्मक शिल्प व चित्र बिखरे पड़े हैं।''[6]

ये गुफाएँ भित्ति चित्रण के प्रतीकात्मक रूप में प्रसिद्ध हैं। बादामी की प्रथम गुफा से 'शिव तांडव' का चित्र मिलता है। बादामी की दूसरी गुफा नृत्य के लिए प्रसिद्ध है। बादामी के चित्रों का प्रतीकात्मक रूप धार्मिक और पौराणिक है। इन गुफाओं में आध्यात्मिक प्रतीकों की रचना चित्रों के माध्यम से की गई है। **(चित्र सं० 4)** बादामी के सभी चित्र अध्यात्म व पौराणिक दर्षन कराते हैं। इस प्रकार बादामी के सभी चित्र प्रसिद्धि के पात्र हैं। इन गुफाओं को देखने के लिये संसार भर से व देश के कोन–कोने से लोग आते हैं। इन चित्रों में भित्ति चित्रकला के साथ–साथ प्रतीकात्मक अंकन की विशिष्ट झलक है।

बादामी की चौथी गुफा की छत से विभिन्न दृश्य प्राप्त हैं। प्रथम दृश्य शिव विवाह पर आधारित है। यह दृश्य भी भित्ति चित्रण में एक पौराणिक प्रतीकात्मकता का अद्भुत नमूना है। इस चित्र में शिव के विवाह को बड़ी उत्कृष्टता के साथ चित्रित किया गया है। दूसरे दृश्य में एक राजमहल के कक्ष के दृश्य को चित्रित किया गया है, और उस दृश्य में एक राजसी मुगल का अंकन है। इस दृश्य में प्रेम की प्रतीकात्मकता की झलक हैं, जो प्रेम का प्रतीक हैं। तीसरे दृश्य में मुगल बादलों के साथ उड़ते हुए बनाए गए हैं। बादामी भित्ति चित्रण में चौथे दृश्य में सुन्दर– सुन्दर मुगल आकृतियाँ निर्मित की गई हैं। इन आकृतियों में विद्याधर कर्ण कुण्डल पहने हुए हैं तथा विद्याधारी वीणा बजा रही है। ये दृश्य भी सुन्दरता और प्रेम का प्रतीक है। बादामी की 4वीं गुफा में भगवान विश्णु जी की प्रतिमा का अंकन है, जो कि आध्यात्म और शक्ति का प्रतीक है। शिल्प सज्जा, वास्तुकला और चित्रकारी की दृष्टि से चौथी गुफा श्रेष्ठ है। अतः बादामी की गुफाएँ भी भित्ति चित्रों

में पौराणिक, प्रेम आदि प्रतीकात्मक रूपों का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। इन गुफाओं में विभिन्न रूपों का सुन्दर प्रतीक चित्रण है। **(चित्र सं० 5)**

भारतीय भित्ति चित्रण के प्रतीकात्मक चित्रण के लिये सित्तनवासल गुफाएँ भी प्रसिद्ध हैं। सित्तनवासल गुफाओं में भी सुन्दर भित्ति चित्रण नमूने व प्रतीक अर्थों वाले चित्र हैं। सित्तनवासल गुफा तमिलनाडु राज्य के पदुकोट्टा नामक स्थान पर स्थित है। यह गुफा कृष्णा नदी के तट पर स्थित है। ''आकृतियों का बड़ा ही सजीवता युक्त और प्रभावपूर्ण अंकन हुआ है।''[7] जैन धर्म से सम्बन्धित सबसे प्राचीन चित्र सित्तनवासल गुफाओं में ही पाए गए हैं। सित्तनवासल के चित्र भी विभिन्न प्रकार के चित्रों का प्रतीकात्मक रूप है। **(चित्र सं० 6)** सित्तनवासल गुफा की खोज टी०एस० गोपीनाथ राव तथा दुब्रील ने की थी। सित्तनवासल गुफा 'अर्द्धनारीश्वर', के लिये मुख्य रूप से प्रसिद्ध है। 'पंच जैन मूर्तियाँ' जो जैन धर्म का सबसे प्राचीन नमूना है, यह धार्मिक प्रतीक चित्रण का रूप है। इसी प्रकार एक सुन्दर भित्ति चित्र 'सरोवर का दृश्य' है। इस सरोवर में सुन्दर 'कमल के पुष्प' खिले हैं। इस सरोवर में हाथी, हंस, भैंसे तथा तीन दिव्य आकृतियाँ चित्रित है। ''पूर्वकालिक जानतिक उन्नति के रहस्य और स्वर्णिम स्मृतियों को चिरस्थायी बनाने और उनका प्रतिनिधित्व करने की अपूर्व क्षमता तत्कालीन चित्रकला में है।''[8] इन चित्रों में सुन्दरता व प्रेम का प्रतीक चित्रण है।

एलोरा गुफाएँ भी भारतीय भित्ति चित्रण का श्रेष्ठ नमूना हैं। ये गुफाएँ महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद जिले में स्थित है। एलोरा में भी पौराणिक व धार्मिक चित्रों का बहुत ही रमणीक चित्रण स्थित है। इस चित्रण में ऐसा लगता है कि जैसे 'भगवान की नगरी' यहीं पर बस गई हो। एलोरा में कुल 36 गुफाएँ है। ''भारत में पूर्व मध्यकाल में जो ख्याति 'अजन्ता की है, वही 'एलोरा' की भी है।''[9] एलोरा गुफा के चित्र धार्मिक व पौराणिक प्रतीक चित्रण के अन्तर्गत आते हैं। एलोरा में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित 12, जैन धर्म से सम्बन्धित 5 व ब्राह्मण धर्म से सम्बन्धित 19 गुफाएँ है। एलोरा की 16 वीं गुफा 'कैलाश मन्दिर' के लिये प्रसिद्ध है। एलोरा गुफा के अन्य चित्रों व स्थापत्यों में 'रावण की खाई', 'अवलोकिते स्वर की प्रतिमा', 'कैलाश हिलाता रावण' आदि हैं। एलोरा गुफा भारतीय स्थापत्य का व भित्ति चित्रण का विश्व प्रसिद्ध स्थान है। **(चित्र सं० 7)** एलोरा में विभिन्न प्रकार की कलाकृतियाँ व भित्ति चित्रकारी है, जो प्रतीकात्मक रुप लिए हुए हैं। इनमें सुन्दर–सुन्दर प्रतीक चित्रण हैं जो विश्व प्रसिद्ध है। एलोरा गुफा भारत की अमूल्य धरोहर है।

सन्दर्भ

1. द्विवेद्वी, डॉ० प्रेम शंकर, द्विवेद्वी, डॉ० मनीष कुमार, 2010, भारतीय भित्ति चित्रकला, कला प्रकाशन, वाराणसी, पृ०–**20**
2. द्विवेद्वी, डॉ० प्रेम शंकर, द्विवेद्वी, डॉ० मनीष कुमार, 2010, भारतीय भित्ति चित्रकला, कला प्रकाशन, वाराणसी, पृ०–**22**
3. वर्मा, डॉ० अविनाश बहादुर, 2006, भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, पृ०–**69**
4. चन्द्र, जगदीश, कला यात्री, प्रज्ञा भारतीय कला का प्रकाशन गृह, कृष्णनगर दिल्ली, पृ०–**34**

5. प्रताप, डॉ० रीता, 2016, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ0–**61**
6. अग्रवाल, डॉ० आर०ए०, 2016, भारतीय चित्रकला का विवेचन, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, पृ०–**56**
7. अग्रवाल, डॉ० गिर्राज किशोर, कला और कलम, संजय पब्लिकेशन, आगरा, पृ०सं०–**102**।
8. चतुर्वेदी, डॉ० गोपाल चन्द मधुकर, भारतीय चित्रकला : ऐतिहासिक सन्दर्भ, साहित्य संगम, इलाहाबाद, पृ०–**49**
9. प्रताप, डॉ० रीता, 2016, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ०–**582**

चित्र संख्या 1

चित्र संख्या 2

चित्र संख्या 3

चित्र संख्या 4

चित्र संख्या 5

चित्र संख्या 6

चित्र संख्या 7